IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

झारखण्ड आन्दोलन में जनजातियों की भूमिका

Alka Shiwani

Research Scholar ,Department of History

Radha Govind University,Ramgarh Jharkhand.

सार

भारत के छोटानागपुर पठार और इसके आसपास के क्षेत्र जिले झारखण्ड के नाम से जाना जाता है, को अलग राज्य का दर्जा देने की मांग के साथ शुरू होने वाला एक सामाजिक–राजनीतिक आन्दोलन था। इसकी शुरूआत 20वीं सदी की शुरूआत में हुई अंततः बिहार पुनर्गठन बिल के 2000 में पास होने के बाद इसे अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

झारखण्ड वनों से आच्छादित छोटानागपुर के पठार का हिस्सा है जो गंगा के मैदानी हिस्से के दक्षिण में स्थित है। अपने वृहत और मूल अर्थ में झारखण्ड क्षेत्र में पुराने बिहार के ज्यादातर दक्षिणी हिस्से और छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और उड़िसा के कुछ जिले में शामिल है।

1845 ई0 में पहली बार यहाँ ईसाई मिशनरियों के आगमन से इस क्षेत्र में एक बड़ा सांस्कृतिक परिवर्त्तन और उथल–पुथल शुरू हुआ। उन्होंने इस क्षेत्र में ईसाई स्कूल और अस्पताल खोले। लेकिन ईसाई धर्म में वृहत धर्मांतरण के बावजूद जनजातियों ने अपनी पारंपरिक धार्मिक आस्थाएँ भी कायम रखीं और ये द्वंद कायम रहा। झारखण्ड के खनिज पदार्थों से सम्पन्न होने का खामियाजा भी इसी क्षेत्र के आदिवासियों को चुकाते रहना पड़ा है। इसके बावजूद कभी इस क्षेत्र की प्रगति पर ध्यान नहीं दिया गया। केन्द्र में चाहे जिस पार्टी की सरकार रही हो, उसने हमेशा इस क्षेत्र में दोहण के विषय में ही सोचा था। यह भी झारखण्ड आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण कारण रहा हैं।

सदियों से समाज की मुख्य धारा से अलग रहने के कारण आदिवासी (जनजाति) अन्य वर्गो की तुलना में अत्यन्त पिछड़े हुए हैं। झारखण्ड एक जनजातीय राज्य है। 15 नवम्बर 2000 को यह प्रदेश भारत वर्ग का 28वाँ राज्य बना।

कूट शब्द–जोहार खांड, भू–खण्ड, वर्चस्व, विलय, पुर्नवास, समन्वय।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। आधुनिक युग की खोज उपभोगवाद पर आधारित है। किन्तु आदिम इतिहास के संदर्भ में आदिम जनजातीय का अध्ययन करना भी आधुनिक समाज की आवश्यकता है। ये आदिम आदिवासी जनजाति जंगलों में निवास करती है, जंगल ही इनका जीवन है तथा आधुनिकता की चकाचौंध से कौंसों दूर है। कभी–कभी ऐसा लगता है कि ये जनजाति अपने जंगली वातावरण में ही मदमस्त जीवन यापन करने के लिए बनी है।

वर्तमान परिवेश में आदिवासी जनजाति समुदाय का विकास सरकार की प्रमुखता है। देश के सम्पूर्ण विकास में सभी समुदाय का सहयोग आवश्यक है, किसी एक समुदाय को छोड़कर देश का समग्र विकास नहीं किया जा सकता है। भारतीय आदिम जनजाति ने अपने आपको विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रखा है जो कि भारतीय जनजातियों की प्रमुख विशेषता है। पराधीनता के समय में जब अंग्रेजों ने इनके निवास स्थलों पर अतिक्रमण किया तो ये सीधे–सादे आदिवासियों ने अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध अपने परम्परागत हथियारों तीर, धनुष, भाले से लड़ाई लड़ी। ये आदिवासी और जनजातियों जंगलों, नदी, नालों और जंगली जानवरों के बीच सदियों से सहचर करते आ रहे हैं। यदि कोई इनके क्षेत्रों में अतिक्रमण करे तो ये सीधे–सादे आदिवासी भी उग्र हो उठते हैं। इन जनजातियों में सामाजिक–आर्थिक विकास की कोई खास होड़ भी नहीं है, इसी कारण इस समुदाय

में सदियों बाद भी विकासात्मक परिवर्त्तन दिखाई नहीं पड़ता है। ये जनजाति अपने परिवार, समाज में ही खुश या सुखी सम्पन्न है।

मेरे शोध अध्ययन का विषय झारखण्ड आन्दोलन में जनजातियों की भूमिका एक ऐतिहासिक अध्ययन। इसी विषय पर जनजातियों भी झारखण्ड आंदोलन में सक्रिय भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। झारखण्ड आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि एवं आन्दोलन से जुड़े जनजातिय समुदाय के प्रमुख सक्रिय नेताओं एवं उनके योगदान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का प्रयासमात्र है।

झारखण्ड आन्दोलन में जनजातियों की भूमिका

झारखण्ड शब्द की उत्पत्ति 'जोहर खोंड' से प्राप्त हुई है, जिसका अर्थ साल पेड़ो का पवित्र कुंज है। झारखण्ड जहाँ पर संथाली लोग माता प्रकृति की पूजा करते हैं। झारखण वनों से आच्छादित छोटानागपुर के पठार का हिस्सा है जो गंगा के मैदानी हिस्से के दक्षिण में स्थित है। झारखण्ड शब्द का प्रयोग कम से कम चार सौ साल पहले सोलहवीं शताब्दी में हुआ, माना जाता है अपने वृहत और मूल अर्थ में झारखण्ड क्षेत्र में पुराने बिहार के ज्यादातर दक्षिणी हिस्से और छत्तीसगढ़,

पश्चिम बंगाल और उड़िसा के कुछ जिले में शामिल है। इस क्षेत्र में नागपुरी कुड़माली हो संथाली तथा खोरठा भाषा बोली जाती है।

झारखण्ड आन्दोलन की कहानी एक तरह से जयपाल सिंह के इस आंदोलन में प्रवेश करने के साथ ही शुरू हो जाती है। इस आन्दोलन की छोटानागपुर अलग प्रांत की मांग के रूप में काफी पहले ही रख दी गई थी, लेकिन जयपाल सिंह की सक्रिय भूमिका के बाद ही आन्दोलन ने जोर पकड़ा। जयपाल सिंह जल्द ही झारखण्ड आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु और सुप्रीमो बन गए।

छोटानागपुर संथालपरगना के जंगलों एवं पहाड़ो में अलग झारखण्ड राज्य का नारा सर्वप्रथम गूंजा था। 1939 में जब छोटानागपुर आदिवासी सभा के मंच से इस संबंध में प्रस्ताव पारित किया गया था। सभा की अध्यक्षता जयपाल सिंह ने की थी। छोटानागपुर आदिवासी महासभा, छोटानागपुर, उन्नति समाज का नया रूपान्तरण था। उन्नति समाज में छोटानागपुर के जनजातियों में राजनीतिक चेतना का संचार किया था।

1939 के आरम्भ में जयपाल सिंह जो उस समय बीकानेर रियासत में मंत्री थे, पटना जाने के क्रम में राँची आये थे, छोटानागपुर आदिवासी सभा के गणमान्य नेता उनसे जाकर मिले। ये नेता उनसे पूर्व से परिचित थे। उन्होंने इस मौके का लाभ उठाते हुए जयपाल सिंह से आग्रह किया कि वह छोटानागपुर आदिवासी सभा के अधिवेशन की अध्यक्षता करें। जयपाल सिंह खुद भी इसमें दिलचस्पी रखते थे। उन्होंने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। वह छोटानागपुरियों की हालत में सुधार लाने में सक्रिय भूमिका निभाना चाहते थे। जयपाल सिंह सभा के नियमित सदस्य बन गए और इसके बाद वह सभा के अध्यक्ष चुन लिये गए।

जनवरी 1939 में छोटानागपुर आदिवासी सभा की ऐतिहासिक महासभा राँची में सम्पन्न हुई। इसी सभा में पहली बार छोटानागपुर संथालपरगना को अलग राज्य का दर्जा देने की माँग की गई।

Copyright@ijaer.org

- झारखण्ड को अलग प्रांत बनाने का आन्दोलन देश के अंदर चल रहे आन्दोलनों में से सबसे लंबा चलने वाला आंदोलन रहा है। सच तो यह है कि अंग्रेजों के शासन काल में उनके खिलाफ आदिवासी क्षेत्रों में जो विद्रोह संगठित हुए उसी में अलग राज्य के बीज निहित थे।
- छोटानागपुर के जनजातीय क्षेत्रों के लिए झारखण्ड शब्द का प्रयोग पहली बार मध्यकाल में हुआ। इसका प्रथम प्रयोग 13वीं शताब्दी के एक ताम्रपत्र पर हुआ हैं। इस काल में यह एक स्पष्ट एवं पृथम भू–खण्ड के रूप में संगठित हुआ।
- ब्रिटिश शासन काल के दौरान झारखण्ड प्रारंभ में बंगाल एवं बाद में बिहार प्रांत का अंग बना।
- पृथक झारखण्ड की माँग ब्रिटिश काल से ही होती रही है। झारखण्ड में अंग्रेजों और उनकी शोषणकारी तथा शत्रुवत नीतियों के विरूद्ध आंदोलन चलता रहा।
- झारखण्उ आन्दोलन का बीजारोपण ढाका में किया गया था।
- ढाका विद्यार्थी परिषद की एक शाखा राँची में भी थी, जो आगे चलकर छोटानागपुर उन्नति समाज एवं बाद में झारखण्ड पार्टी के रूप में विकसित हुई।
- चाईबासा निवासी जे. बाथोलमन ढाका विद्यार्थी परिषद की राँची शाखा के संचालक थे। उसे ही झारखण्ड आंदोलन का जन्मदाता माना जाता है।
- जे. बाथोलमन ने 1912 ई. में 'क्रिश्चियन' स्टूडेंटस आर्गेनाइजेशन' की स्थापना की।
- अलग झारखंड के लिए आंदोलन को जीवित बनाये रखने के उद्देश्य से नये संस्थानों तथा संगठनों का उदय हुआ।

- इस संगठन का प्रारंभिक उद्देश्य गरीब ईसाइ विद्यार्थियों की मदद करना था। बाद में इसे केवल विद्यार्थियों तक ही सीमित न रखकर झारखण्ड के सभी आदिवासियों के सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण का साधन बनाया गया।

- 1915 में झारखण्ड का पहला अंतर्जातीय आदिवासी संगठन, छोटानागपुर उन्नति समाज स्थापित हुआ। आदिवासियों के समाजिक एवं आर्थिक हितों की रक्षा करना इस समाज का मुख्य लक्ष्य था।
- जुएल लकड़ा, पीटर दयाल, बंदीराम उरांव, ठेबले उरांव इस समाज के प्रमुख नेता थे।
- पृथक राज्य के लिए एक सुनियोजित संघर्ष 1928 ई0 में प्रारंभ हुआ।
- 1928 ई0 में साइमन कमीशन ने झारखण्ड क्षेत्र से प्राप्त एक ज्ञापन के आधार पर झारखण्ड को पृथक राज्य बनाने की अनुशंसा की थी, परन्तु ब्रिटिश शासकों ने उस पर कोई विचार नहीं किया।
- झारखण्ड के संघर्षशील नेताओं ने वर्ष 1938 ई0 में आदिवासी महासभा का गठन करके अपना संघर्ष योजनाबद्ध ढंग से प्रारंभ कर दिया। 1939 ई0 में थियोडेर सुरीन के बाद जयपाल सिंह इसके अध्यक्ष बने।
- 1946 ई0 के संसदीय चुनाव में आदिवासी महासभा को केवल तीन सीटें प्राप्त हुई। जयपाल सिंह खूंटी से चुनाव हार गए।
- 1947 में देश स्वतंत्र हुआ तो झारखण्ड क्षेत्र के नेताओं की महत्वकाक्षांए भी मुखरित हुई, परन्तु उन्हें केन्द्र व राज्य सरकार से सहयोग नहीं मिला।
- आदिवासी नेता जयपाल सिंह ने वर्ष 1950 ई0 में ''आदिवासी महासभा'' का नाम परिवर्तित करके ''झारखण्ड पार्टी'' रखा।

- झारखण्ड पार्टी का गठन झारखण्ड आन्दोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इसके दरवाजे, अलग झारखण्ड राज्य समर्थक, गैर–आदिवासियों के लिए भी खोल दिये गए।
- झारखण्ड पार्टी ने नवगठित क्षेत्रीय राजनीतिक दल के रूप में झारखण्ड क्षेत्र में राजनीतिक–सामाजिक चेतना प्रज्जवलित करने के साथ–साथ जनमत संगठित करने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी।
- वर्ष 1952 में अखण्ड बिहार के प्रथम विधानसभा चुनाव में जयपाल सिंह के कुशल नेतृत्व में झारखण्ड पार्टी ने 32 विधानसभा क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर मुख्य विपक्षी दल का रूतबा प्राप्त किया।
- 1954 में सुखदेव महतो के नेतृत्व में किसान सभा का गठन किया गया।
- 1957 एवं 1962 के विधानसभा चुनावों में झारखण्ड पार्टी की सीटें क्रमशः घटती गयी।
- झारखण्ड पार्टी ने अपने राजनीतिक वर्चस्व के आधार पर राज्य विधानसभा व लोकसभा में अपनी मांग को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।
- झारखण्ड पार्टी ने 1955 में राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष जयपाल सिंह के नेतृत्व में अलग झारखण्ड राज्य की मांग को लेकर एक प्रभावशाली प्रदर्शन किया। तब आयोग इस क्षेत्र के दौरे पर आया, किन्तु उसने अलग राज्य की अनुशंसा नहीं की।
- राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष झारखण्ड पार्टी ने अलग राज्य का जो प्रयोग पेश किया था, उसमें तत्कालीन बिहार के 7 बंगाल के 3 उड़ीसा के 4 और मध्यप्रदेश के 1 जिलों को मिलाकर कुल 16 जिलों के साथ झारखण्ड की माँग की गयी थी।
- 10 फरवरी 1961 को पहली बार बिहार विधान परिषद में सीताराम जगतराम ने पृथक झारखण्ड के गठन हेतु भारत सरकार से आग्रह करने के लिए सदन में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव पर काफी चर्चाएँ हुई, परन्तु 24 मार्च 1961 को सदन ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।

- वर्ष 1963 में झारखण्ड पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया, जिससे पृथक झारखण्ड राज्य आंदोलन को गहरा झटका लगा। यह विलय बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री विनोदानंद झा की पहल पर हुआ।
- 1965 में बिरसा सेवा दल की स्थापना की गयी। इस दल ने आदिवासियों की मांग को नया स्वर दिया।
- 1967 में अखिल भारतीय झारखण्ड पार्टी का गठन हुआ।
- 1968 में हुल झारखण्ड पार्टी का गठन किया गया।
- वर्ष 1970 में जयपाल सिंह का निधन हो गया।
- 4 फरवरी 1973 को शिवाजी समाज के विनोद बिहारी महतो एवं सोनोत संथाल समाज के शिबू सोरेन ने मिलकर झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। विनोद बिहारी महतो अध्यक्ष एवं शिबू सोरेन महासचिव बनाये गये।
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने अपने चार लक्ष्य तय किये अलग झारखण्ड राज्य के निर्माण के लिए संघर्ष, महाजनी प्रथा के खिलाफ संघर्ष विस्थापितों के पुर्नवास एवं कल–कारखानों में स्थानीय लोगों की बहाली के लिए संघर्ष तथा वन कानून के विरोध में जंगल कटाई का आंदोलन।
- 1985 ई. में कांग्रेस ई के विधायक देवेन्द्रनाथ चांपिया के नेतृत्व में बिहार विधानमंडल के झारखण्ड क्षेत्र के 52 विधायकों ने झारखण्ड क्षेत्र को केन्द्रीय प्रशासन के अधीन सौंपने की मांग से संबंधित एक संयुक्त पत्र देश के प्रधानमंत्री को दिया।
- 22 जून 1986 को जमशेदपुर में सूर्य सिंह बेसरा के नेतृत्व में असम छात्र संगठन आसू की तर्ज पर ऑल झारखण्ड स्टूडेन्ट्स युनियन (आजसू) का गठन हुआ।

- सूर्य सिंह बेसरा ने आन्दोलन के कार्यक्रम की घोषणा में खून के बदले खून की रणनीति का प्रतिपादन किया।
- झारखण्ड आंदोलन में लगे विभिन्न दलों में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से 1987 ई0 में झारखण्ड समन्वय समिति (जेसीसी) का गठन हुआ।
- जून 1987 में झारखण्ड समन्वय समिति का रामगढ़ में सम्मेलन हुआ, जिसमें 25 सदस्यीय कमिअी का गठन किया गया। डॉ0 विश्वेश्वर प्रसाद केसरी इसके संयोजक बनाये गये।
- इस सम्मेलन में झारखण्ड क्षेत्र में कार्यरत 53 संगठन, जिसमें बुद्धिजीवी, श्रमिक, स्त्रियाँ, शिक्षक, छात्र हर तरह के लोग शामिल थे।
- दिसम्बर 1987 में झारखण्ड समन्वय समिति द्वारा तत्कालीन राष्ट्रपति आर0 वेंकट रमण को एक ज्ञापन दिया गया, जिसमें बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा एवं मध्यप्रदेश के 21 जिलों को मिलाकर अलग झारखण्ड राज्य बनाने की माँग की गई।

इस प्रकार विभिन्न पार्टियों, राजनीतिक दलों के अथक प्रयास का परिणाम हुआ कि अंततः श्रीमती राबड़ी देवी की अल्पमत सरकार ने कांग्रेस के दबाव में 25 अप्रैल 2000 को पृथक झारखण्ड राज्य के गठन हेतु बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक–2000 को स्वीकृति प्रदान की। 25 अगस्त, 2000 को राष्ट्रपति ने विधेयक पर हस्ताक्षर करके अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। इस प्रकार झारखण्ड राज्य के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ और 15 नवम्बर 2000 को देश के 28वें राज्य के रूप में झारखण्ड राज्य का उदय हुआ।

निष्कर्ष

झारखण्ड आंदोलन भारत में छोटानागपुर पठार और इसके आसपास के क्षेत्र जिसे झारखण्ड के नाम से जाना जाता है को अलग राज्य का दर्जा देने की माँग से शुरू होने वाला एक सामाजिक–राजनीतिक आन्दोलन था। इसकी शुरूआत 20वीं सदी के शुरूआत में हुई। झारखण्ड को अलग प्रांत बनाने का आंदोलन देश के अंदर चल रहे आन्दोलनों में से सबसे लंबा चलने वाला आंदोलन रहा। आंदोलनकारियों एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप अंततः 15 नवम्बर 2000 में बिहार पुर्नगठन बिल के पास होने के बाद अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. वार्षिक प्रतिवेदन : आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण झारखण्ड

2. डॉ. एस के सिंह, झारखण्ड परिदृश्य क्राउन पब्लिकेशन राँची 2009

3. आदिवासी चिंतन की भूमिका, विनय कुमार शर्मा।

4. झारखण्ड आंदोलन के दस्तावेज, वीर भारत तलवार।

5. रामकुमार तिवारी – झारखण्ड आन्दोलन।

6. अनुज कुमार सिन्हा – असली झारखण्ड।

7. बलबीर दत्त – कहानी झारखण्ड आन्दोलन की

8. बैधनाथ उपाध्याय – झारखण्ड अपडेट।